



(१)

॥ मन्युसूक्त पुनश्चारण विधानं ॥

“यस्तेमन्यविति” सप्तर्चस्य सूक्तस्य तापसपुत्रो मन्युर्ऋषिः ।

मन्युर्देवता आद्याजगती, शिष्टास्त्रिष्टुभः ।

“त्वयामन्यविति” सप्तर्चस्य सूक्तस्य तापसपुत्रो मन्युर्ऋषिः मन्युर्देवता ।

आद्यास्तिस्रःत्रिष्टुभः अन्त्याश्चतस्रो जगत्यः ।

मन्युदेवता प्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ।

ससृष्टं धनमुभयं समाकृतम् - अंगुष्ठाभ्यां नमः

अस्मभ्यं दतां वरुणश्च मन्युः - तर्जनीभ्यां नमः

भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः - मध्यमाभ्यां नमः

पराजितासो अप नि लयताम् - अनामिकाभ्यां नमः

ससृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं दतां वरुणश्चमन्युः - कनिष्ठिकाभ्यां नमः

भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः पराजितासो अप नि लयताम् - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

एवं हृदयादि न्यासः ।

**ध्यानम् रुद्रकोप समुद्भूतं जटामण्डलमण्डितम् ॥**

**त्रिनेत्रं पंचवक्त्रं च रुद्रं मन्युं नमाम्यहम् ॥** लं इत्यादि पंचपूजा

|    |                               |                          |
|----|-------------------------------|--------------------------|
| १  | यस्ते मन्योऽविधद्वज्रसायक     | पराजितासो अप नि लयन्ताम् |
| २  | सह ओजः पुष्यति विश्वमानुषक्   | “                        |
| ३  | साह्याम दासमार्यम् त्वया युजा | “                        |
| ४  | सहस्कृतेन सहसा सहस्वता        | “                        |
| ५  | मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवः | “                        |
| ६  | मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः    | “                        |
| ७  | मन्युं विश ईळते मानुषीर्याः   | “                        |
| ८  | पाहि नो मन्यो तपसा सजोषाः     | “                        |
| ९  | अभीहि मन्यो तवसस्तवीयान्      | “                        |
| १० | तपसा युजा वि जहि शत्रून्      | “                        |
| ११ | अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च    | “                        |
| १२ | विश्वा वसून्या भरा त्वं नः    | “                        |
| १३ | त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः    | “                        |
| १४ | स्वयंभूर्भामो अभिमातिषाहः     | “                        |
| १५ | विश्वचर्षणिः सहुरिः सहावान्   | “                        |

|    |                                     |                          |
|----|-------------------------------------|--------------------------|
| १६ | अस्मास्वोजः पृतनासु धेहि            | पराजितासो अप नि लयन्ताम् |
| १७ | अभागः सन्नप परेतो अस्मि             | "                        |
| १८ | तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः          | "                        |
| १९ | तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीळाहं      | "                        |
| २० | स्वा तनूर्बलदेयाय मेहि              | "                        |
| २१ | अयं ते अस्म्युप मेह्यर्वाङ्         | "                        |
| २२ | प्रतीचीनः सहुरे विश्वधायः           | "                        |
| २३ | मन्यो वज्रिन्नभि मामा ववृत्स्व      | "                        |
| २४ | हनाव दस्यूरुत बोध्यापेः             | "                        |
| २५ | अभिप्रेहि दक्षिणतो भवामे            | "                        |
| २६ | अधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि           | "                        |
| २७ | जुहोमि ते धरुणं मध्वो अग्रं         | "                        |
| २८ | उभा उपांशु प्रथमा पिबाव             | "                        |
| २९ | त्वया मन्यो सरथमारुजन्तः            | "                        |
| ३० | हर्षमाणामो धृषिता मरुत्वः           | "                        |
| ३१ | तिग्मेषव आयुधा संशिशानाः            | "                        |
| ३२ | अभि प्र यन्तु नरो अग्निरूपाः        | "                        |
| ३३ | अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व       | "                        |
| ३४ | सेनानीर्नः सहुरे हूत एधि            | "                        |
| ३५ | हत्वाय शत्रून् विभजस्व वेदः         | "                        |
| ३६ | ओजो मिमानो विमृधोनुदस्व             | "                        |
| ३७ | सहस्व मन्यो अभिमातिमरमे             | "                        |
| ३८ | रुजन् मृणन् प्रमृणन् प्रेहि शत्रून् | "                        |
| ३९ | उग्रं ते पाजो नन्वा रुरुधे          | "                        |
| ४० | वशी वशं नयस एकज त्वम्               | "                        |
| ४१ | एको बहूनामसि मन्यवीळितः             | "                        |
| ४२ | विशंविशं युधये सं शिशाधि            | "                        |
| ४३ | अकृत्तरुक् त्वया युजा वयं           | "                        |
| ४४ | द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्महे       | "                        |
| ४५ | विजेषकृदिन्द्र इवानवब्रवः           | "                        |
| ४६ | अस्माकं मन्यो अधिपा भवेह            | "                        |
| ४७ | प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि         | "                        |
| ४८ | विद्या तमुत्सं यत आबभूथ             | "                        |
| ४९ | आभूत्या सहजा वज्र सायक              | "                        |

|    |                                     |                          |
|----|-------------------------------------|--------------------------|
| ५० | सहो बिभर्ष्यभिभूत उत्तरम्           | पराजितासो अप नि लयन्ताम् |
| ५१ | क्रत्वा नो मन्यो सह मेद्येधि        | ..                       |
| ५२ | महाधनस्य पुरुहूत संसृजि             | ..                       |
| ५३ | संसृष्टं धनमुभयं समाकृतं            | ..                       |
| ५४ | अस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः      | ..                       |
| ५५ | भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः           | ..                       |
| ५६ | पराजितासो अप नि लयन्ताम्            | ..                       |
| ५७ | पराजितासो अप नि लयन्ताम्            | ..                       |
| ५८ | भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः           | ..                       |
| ५९ | अस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः      | ..                       |
| ६० | संसृष्टं धनमुभयं समाकृतम्           | ..                       |
| ६१ | महाधनस्य पुरुहूत संसृजि             | ..                       |
| ६२ | क्रत्वा नो मन्यो सह मेद्येधि        | ..                       |
| ६३ | सहोबिभर्ष्यभिभूत उत्तरम्            | ..                       |
| ६४ | आभूत्या सहजा वज्र सायक              | ..                       |
| ६५ | विद्यातमुत्सं यत आबभूथ              | ..                       |
| ६६ | प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि         | ..                       |
| ६७ | अस्माकं मन्यो अधिपा भवेह            | ..                       |
| ६८ | विजेषकृदिन्द्र इवानवब्रवः           | ..                       |
| ६९ | द्युमन्तं घोषं विजयाय कृष्महे       | ..                       |
| ७० | अकृत्तरुक्त्वया युजा वयम्           | ..                       |
| ७१ | विशंविशं युधये सं शिशाधि            | ..                       |
| ७२ | एको बहूनामसि मन्यवीळितः             | ..                       |
| ७३ | वशी वशं नयस एकज त्वम्               | ..                       |
| ७४ | उग्रं ते पाजोनन्वा रुरुधे           | ..                       |
| ७५ | रुजन् मृणन् प्रमृणन् प्रेहि शत्रून् | ..                       |
| ७६ | सहस्व मन्यो अभिमातिमस्मे            | ..                       |
| ७७ | ओजो मिमानो विमृधो नुदस्व            | ..                       |
| ७८ | हत्वाय शत्रून् विभजस्व वेदः         | ..                       |
| ७९ | सेनानीर्नः सहुरे हूत एधि            | ..                       |
| ८० | अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व       | ..                       |
| ८१ | अभि प्रयन्तु नरो अग्निरूपाः         | ..                       |
| ८२ | तिग्मेषव आयुधा संशिशानाः            | ..                       |

|     |                                |                          |
|-----|--------------------------------|--------------------------|
| ८३  | हर्षमाणासो धृषिता मरुत्वः      | पराजितासो अप नि लयन्ताम् |
| ८४  | त्वया मन्यो सरथमारुजन्तः       | ..                       |
| ८५  | उभा उपांशु प्रथमा पिबाव        | ..                       |
| ८६  | जुहोमि ते धरुणं मध्वो अग्रम्   | ..                       |
| ८७  | अधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि      | ..                       |
| ८८  | अभि प्रेहि दक्षिणतो भवा मे     | ..                       |
| ८९  | हनाव दस्यूरुत बोध्यापेः        | ..                       |
| ९०  | मन्यो वज्रिन्नभि मामा ववृत्स्व | ..                       |
| ९१  | प्रतीचीनः सहुरे विश्वधायः      | ..                       |
| ९२  | अयं ते अस्म्युप मेह्यर्वाङ्    | ..                       |
| ९३  | स्वा तनूर्बलदेयायमेहि          | ..                       |
| ९४  | तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीळाहं | ..                       |
| ९५  | तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः     | ..                       |
| ९६  | अभागः सन्नप परेतो अस्मि        | ..                       |
| ९७  | अस्मास्वोजः पृतनासु धेहि       | ..                       |
| ९८  | दिश्वचर्षणिः सहुरिः सहावान्    | ..                       |
| ९९  | स्वयंभूर्भामो अभिमातिषाहः      | ..                       |
| १०० | त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः     | ..                       |
| १०१ | विश्वावसून्याभरा त्वं नः       | ..                       |
| १०२ | अभित्रहा वृत्रहा दस्युहा च     | ..                       |
| १०३ | तपसा युजा वि जहि शत्रून्       | ..                       |
| १०४ | अभीहि मन्यो तवसस्तवीयान्       | ..                       |
| १०५ | पाहिनो मन्यो तपसा सजोषाः       | ..                       |
| १०६ | मन्युं विश ईळते मानुषीर्याः    | ..                       |
| १०७ | मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः     | ..                       |
| १०८ | मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवः  | ..                       |
| १०९ | सहस्कृतेन सहसा सहस्वता         | ..                       |
| ११० | साह्याम दासमार्यम् त्वया युजा  | ..                       |
| १११ | सह ओजः पुष्यति विश्वमानुषक्    | ..                       |
| ११२ | यस्ते मन्योऽविधद्वज्र सायक     | ..                       |

|    |  |                           |
|----|--|---------------------------|
| १  | यस्ते मन्योऽविधद्वज्र सायक सह ओजः पुष्यति विश्वमानुषक्       | भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः |
| २  | साह्याम दासमार्यम् त्वया युजा सहस्कृतेन सहसा सहस्वता         | पराजितासो अप नि लयन्तां   |
| ३  | मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवो मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः     | ..                        |
| ४  | मन्युं विश ईळते मानुषीर्याः पाहिनो मन्यो तपसा सजोषाः         | ..                        |
| ५  | अभीहि मन्यो तवसस्तवीयान् तपसा युजा विजहि शत्रून्             | ..                        |
| ६  | अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च विश्वा वसून्या भरा त्वं नः        | ..                        |
| ७  | त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः स्वयंभूर्भामो अभिमातिषाहः         | ..                        |
| ८  | विश्वचर्षणिः सहुरिःसहावानस्मास्वोजः पृतनासु धेहि             | ..                        |
| ९  | अभागः सन्नप परेतो अस्मि तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः           | ..                        |
| १० | तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीळाहं स्वा तनूर्बलदेयाय मेहि        | ..                        |
| ११ | अयं ते अस्म्युप मेह्यर्वाङ् प्रतीचीनः सहुरे विश्वधायः        | ..                        |
| १२ | मन्यो वज्रिन्नभि मामा ववृत्स्व हनाव दस्यूरुत बोध्यापेः       | ..                        |
| १३ | अभि प्रेहि दक्षिणतो भवा मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि          | ..                        |
| १४ | जुहोमि ते धरुणं मध्वो अग्रमुभा उपांशु प्रथमा पिबाव           | ..                        |
| १५ | त्वया मन्यो सरथमारुजन्तो हर्षमाणासो धृषिता मरुत्वः           | ..                        |
| १६ | तिग्मेषव आयुधा संशिशाना अभि प्र यन्तु नरो अग्निरूपाः         | ..                        |
| १७ | अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व सेनानीर्नः सहुरे हूत एधि       | ..                        |
| १८ | हत्वाय शत्रून् विभजस्व वेद ओजो मिमानो विमृधो नुदस्व          | ..                        |
| १९ | सहस्व मन्यो अभिमातिमस्मे रुजन् मृणन् प्रमृणन् प्रेहि शत्रून् | ..                        |
| २० | उग्रं ते पाजो नन्वा रुरुधे वशी वशं नयस एकजत्वम्              | ..                        |
| २१ | एको बहूनामसि मन्यवीळितो विशंविशं युधये सं शिशाधि             | ..                        |
| २२ | अकृत्तरुक् त्वया युजा वयं द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्महे      | ..                        |
| २३ | विजेषकृदिन्द्र इवानवब्रवो ३ स्माकं मन्यो अधिपा भवेह          | ..                        |
| २४ | प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि विद्वा तमुत्सं यत आबभूथ          | ..                        |
| २५ | आभूत्या सहजा वज्रसायक सहोविभर्ष्याभिभूत उत्तरम्              | ..                        |
| २६ | क्रत्वा नो मन्यो सह मेद्येधि महाधनस्य पुरुहूत संसृजि         | ..                        |
| २७ | संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः        | ..                        |
| २८ | भियं दधाना हृदयेषु शत्रवःपराजितासो अप नि लयन्ताम्            | ..                        |
| २९ | भियं दधाना हृदयेषु शत्रवःपराजितासो अप नि लयन्ताम्            | ..                        |
| ३० | संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः        | ..                        |
| ३१ | क्रत्वा नो मन्यो सह मेद्येधि महाधनस्य पुरुहूत संसृजि         | ..                        |

|    |  |                                 |
|----|--|---------------------------------|
| ३२ | आभूत्या सहजा वज्रसायक सहोविभर्ष्याभिभूत उत्तरम्              | भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः       |
| ३३ | प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि विद्वा तमुत्सं यत आबभूथ          | पराजितासो अप नि लयन्तां         |
| ३४ | विजेषकृदिन्द्र इवानवब्रवो ३ स्माकं मन्यो अधिपा भवेह          | ..                              |
| ३५ | अकृत्तरुक् त्वया युजा वयं द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्महे      | ..                              |
| ३६ | एको बहूनामसि मन्यवीळितो विशंविशं युधये सं शिशाधि             | ..                              |
| ३७ | उग्रं ते पाजो नन्वा रुरुधे वशी वशं नयस एकजत्वम्              | ..                              |
| ३८ | सहस्व मन्यो अभिमातिमस्मे रुजन् मृणन् प्रमृणन् प्रेहि शत्रून् | ..                              |
| ३९ | हत्वाय शत्रून् विभजस्व वेद ओजो मिमानो विमृधो नुदस्व          | ..                              |
| ४० | अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व सेनानीर्नः सहुरे हूत एधि       | ..                              |
| ४१ | तिग्मेषव आयुधा संशिशाना अभि प्र यन्तु नरो अग्निरूपाः         | ..                              |
| ४२ | त्वया मन्यो सरथमारुजन्तो हर्षमाणासो धृषिता मरुत्वः           | ..                              |
| ४३ | जुहोमि ते धरुणं मध्वो अग्रमुभा उपांशु प्रथमा पिबाव           | ..                              |
| ४४ | अभि प्रेहि दक्षिणतो भवा मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि          | ..                              |
| ४५ | मन्यो वज्रिन्नभि मामा ववृत्व हनाव दस्यूरुत बोध्यापेः         | ..                              |
| ४६ | अयं ते अस्म्युप मेह्यर्वाङ् प्रतीचीनः सहुरे विश्वधायः        | ..                              |
| ४७ | तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीळाहं स्वा तनूर्बलदेयाय मेहि        | ..                              |
| ४८ | अभागः सन्नप परेतो अस्मि तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः           | ..                              |
| ४९ | विश्वचर्षणिः सहुरिःसहावानस्मास्वोजः पृतनासु धेहि             | ..                              |
| ५० | त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः स्वयंभूर्भामो अभिमातिषाहः         | ..                              |
| ५१ | अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च विश्वा वसून्या भरा त्वं नः        | ..                              |
| ५२ | अभीहि मन्यो तवसस्तवीयान् तपसा युजा विजहि शत्रून्             | ..                              |
| ५३ | मन्युं विश ईळते मानुषीर्याः पाहिनो मन्यो तपसा सजोषाः         | ..                              |
| ५४ | मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवो मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः     | ..                              |
| ५५ | साह्याम दासमार्यम् त्वया युजा सहस्कृतेन सहसा सहस्वता         | ..                              |
| ५६ | यस्ते मन्योऽविधद्वज्र सायक सह ओजः पुष्यति विश्वमानुषक्       | ..                              |
| १  | यस्ते मन्योऽविधद्वज्र सायक सह ओजः पुष्यति विश्वमानुषक्       | संसृष्टं धनमुभयं समाकृतं        |
|    | साह्याम दासमार्यम् त्वया युजा सहस्कृतेन सहसा सहस्वता         | अस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः। |
| २  | मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवो मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः     | भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः       |
|    | मन्युं विश ईळते मानुषीर्याः पाहिनो मन्यो तपसा सजोषाः         | पराजितासो अप नि लयन्तां ॥       |
| ३  | अभीहि मन्यो तवसस्तवीयान् तपसा युजा विजहि शत्रून्             |                                 |
|    | अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च विश्वा वसून्या भरा त्वं नः        | ..                              |

- ४ त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः स्वयंभूर्भामो अभिमातिषाहः  
विश्वचर्षणिः सहुरिःसहावानस्मास्वोजः पृतनासु धेहि
- ५ अभागः सन्नप परेतो अस्मि तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः  
तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीळाहं स्वा तनूर्बलदेयाय मेहि
- ६ अयं ते अस्म्युप मेह्यर्वाड् प्रतीचीनः सहुरे विश्वधायः  
मन्यो वज्रिन्नभि मामा ववृत्स्व हनाव दस्यूरूत बोध्यापेः
- ७ अभि प्रेहि दक्षिणतो भवा मेऽधा वृत्राणि जडघनाव भूरि  
जुहोमि ते धरुणं मध्वो अग्रमुभा उपांशु प्रथमा पिबाव
- ८ त्वया मन्यो सरथमारुजन्तो हर्षमाणासो धृषिता मरुत्वः  
तिग्मेषव आयुधा संशिशाना अभि प्र यन्तु नरो अग्निरूपाः
- ९ अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व सेनानीर्नः सहुरे हूत एधि  
हत्वाय शत्रून् विभजस्व वेद ओजो मिमानो विमृधो नुदस्व
- १० सहस्व मन्यो अभिमातिमस्मे रुजन् मृणन् प्रमृणन् प्रेहि शत्रून्  
उग्रं ते पाजो नन्वा रुरुधे वशी वशं नयस एकजत्वम्
- ११ एको बहूनामसि मन्यवीळितो विशंविशं युधये सं शिशाधि  
अकृत्तरुक् त्वया युजा वयं द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्महे
- १२ विजेषकृदिन्द्र इवानवब्रवो ३ स्माकं मन्यो अधिपा भवेह  
प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि विद्वा तमुत्सं यत आबभूथ
- १३ आभूत्या सहजा वज्रसायक सहोविभर्ष्यभिभूत उत्तरम्  
क्रत्वा नो मन्यो सह मेद्येधि महाधनस्य पुरुहूत संसृजि
- १४ संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः  
भियं दधाना हृदयेषु शत्रवःपराजितासो अप नि लयन्ताम्
- १५ संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः  
भियं दधाना हृदयेषु शत्रवःपराजितासो अप नि लयन्ताम्
- १६ आभूत्या सहजा वज्रसायक सहोविभर्ष्यभिभूत उत्तरम्  
क्रत्वा नो मन्यो सह मेद्येधि महाधनस्य पुरुहूत संसृजि
- १७ विजेषकृदिन्द्र इवानवब्रवो ३ स्माकं मन्यो अधिपा भवेह  
प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि विद्वा तमुत्सं यत आबभूथ
- १८ एको बहूनामसि मन्यवीळितो विशंविशं युधये सं शिशाधि  
अकृत्तरुक् त्वया युजा वयं द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्महे
- संसृष्टं धनमुभयं समाकृतं  
अस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः।  
भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः  
पराजितासो अप नि लयन्तां ॥

|    |   |   |
|----|---|---|
| १९ | सहस्व मन्यो अभिमातिमस्मे रुजन् मृणन् प्रमृणन् प्रेहि शत्रून्<br>उग्रं ते पाजो नन्वा रुरुध्ने वशी वशं नयस एकजत्वम् | संसृष्टं धनमुभयं समाकृतं<br>अस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः। |
| २० | अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व सेनानीर्नः सहुरे हूत एधि<br>हत्वाय शत्रून् विभजस्व वेद ओजो मिमानो विमृधो नुदस्व     | भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः<br>पराजितासो अप नि लयन्तां ॥      |
| २१ | त्वया मन्यो सरथमारुजन्तो हर्षमाणासो धृषिता मरुत्वः<br>तिग्मेषव आयुधा संशिशाना अभि प्र यन्तु नरो अग्निरूपाः        | ..  |
| २२ | अभि प्रेहि दक्षिणतो भवा मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि<br>जुहोमि ते धरुणं मध्वो अग्रमुभा उपांशु प्रथमा पिबाव         | ..  |
| २३ | अयं ते अस्म्युप मेह्यर्वाङ् प्रतीचीनः सहुरे विश्वधायः<br>मन्यो वज्रिन्नभि मामा ववृत्स्व हनाव दस्यूरुत बोध्यापेः   | ..  |
| २४ | अभागः सन्नप परेतो अस्मि तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः<br>तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीळाहं स्वा तनूर्बलदेयाय मेहि       | ..  |
| २५ | त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः स्वयंभूर्भामो अभिमातिषाहः<br>विश्वचर्षणिः सहुरिःसहायानस्मास्वोजः पृतनासु धेहि          | ..  |
| २६ | अभीहि मन्यो तवसस्तवीयान् तपसा युजा विजहि शत्रून्<br>अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च दिश्वा वसून्या भरा त्वं नः         | ..  |
| २७ | मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवो मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः<br>मन्युं विश ईळते मानुषीर्याः पाहिनो मन्यो तपसा सजोषाः  | ..  |
| २८ | यस्ते मन्योऽविधद्वज्र सायक सह ओजः पुष्यति विश्वमानुषक्<br>साह्याम दासगार्यम् त्वदा युजा सहस्कृतेन सहसा सहस्वता    | ..  |

(अन्ते मन्यु सूक्तम पठनीयम् । एवं कृते एका आवृत्तिः भवति)